यूनानी दार्शनिक

डायोजनीज की लालटेन

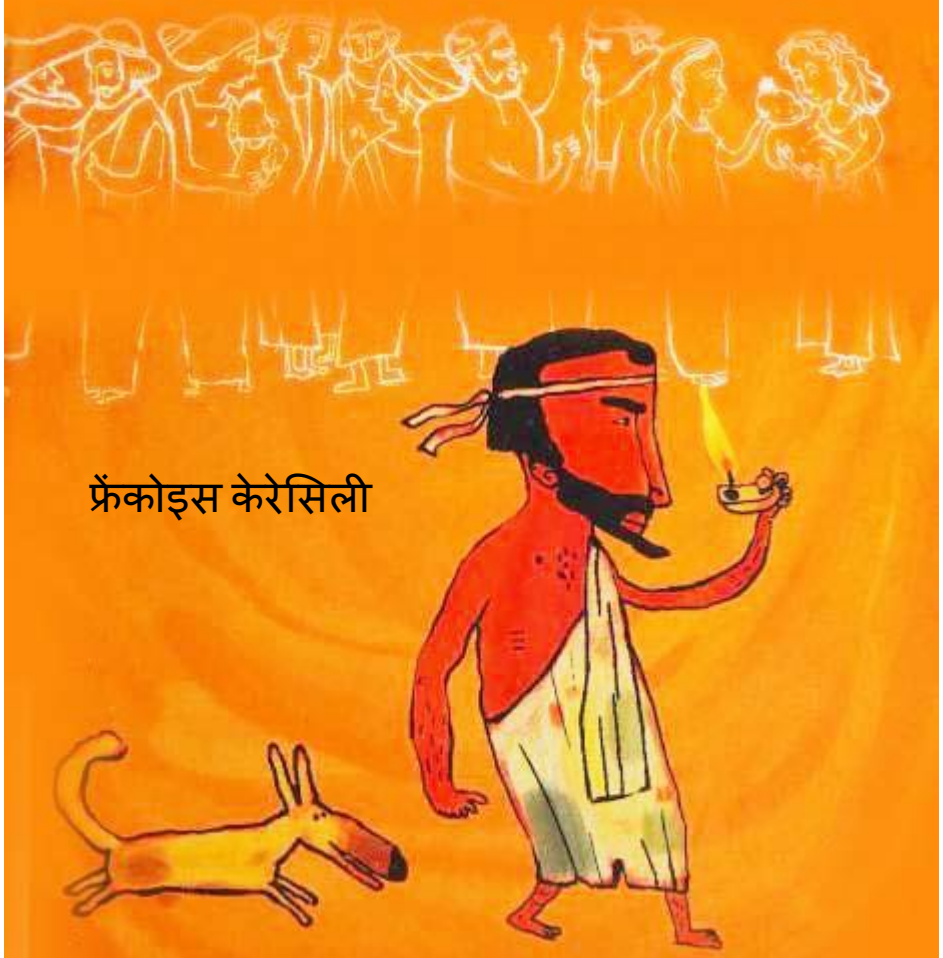

फ्रेंकोइस केरेसिली

यूनान में एक खूबसूरत शहर कुरिन्थ था. वहां डायोजनीज नाम के एक दार्शनिक रहते थे. वो बहुत कम साधनों पर ज़िंदा रहते थे.

उनके अनुसार, ज्ञान का मूल रहस्य था - कि लोग अपनी आवश्यकतायें कम करें. उनकी एकमात्र संपत्ति पहनने के लिए एक पुराना लबादा और रहने के लिए एक अजीब सा मिट्टी का ड्रम था.

यह सच था कि कभी उनके पास एक लकड़ी का कटोरा भी था, लेकिन एक दिन उन्होंने एक लड़के को अपने नंगे हाथों से नल से पानी पीते हुए देखा.

"वो बच्चा मुझसे ज्यादा समझदार है," उन्होंने कहा.

"उसने मुझे दिखाया है कि सिर्फ दो हाथ ही काफी होते हैं."

फिर उसी दिन डायोजनीज ने अपना कटोरा कहीं दूर फेंक दिया.

डायोजनीज, सांसारिक चीज़ों से मुक्त होना चाहते थे.

तो फिर, डायोजनीज ज़िंदा कैसे रहते थे?

वो ठंडा पानी पीते थे, और राहगीर उन्हें ज्ञान के बदले में जो कुछ छोटा-मोटा खाने को देते, उसे वो खाते थे.

वो करते क्या थे?

बाजार में, डायोजनीज पत्थर की मूर्तियों के सामने अपना हाथ फैलाते थे और उनसे सिक्कों की भीख मांगते थे.

लोग उनसे पूछते थे, "डायोजनीज, तुम ऐसा क्यों करते हो?"

“जिससे तुम जैसे बेवकूफ, पत्थर दिल लोगों द्वारा ठुकराए जाने की मुझे आदत पड़ जाए!" डायोजनीज उन पर वापस भौंकते थे.

न्यूनतम चीज़ों से गुज़ारा करना, और जो सच लगे उसे बिना लाग-लपेट के कहना - डायोजनीज ने अपनी पूरी ज़िंदगी यही किया.

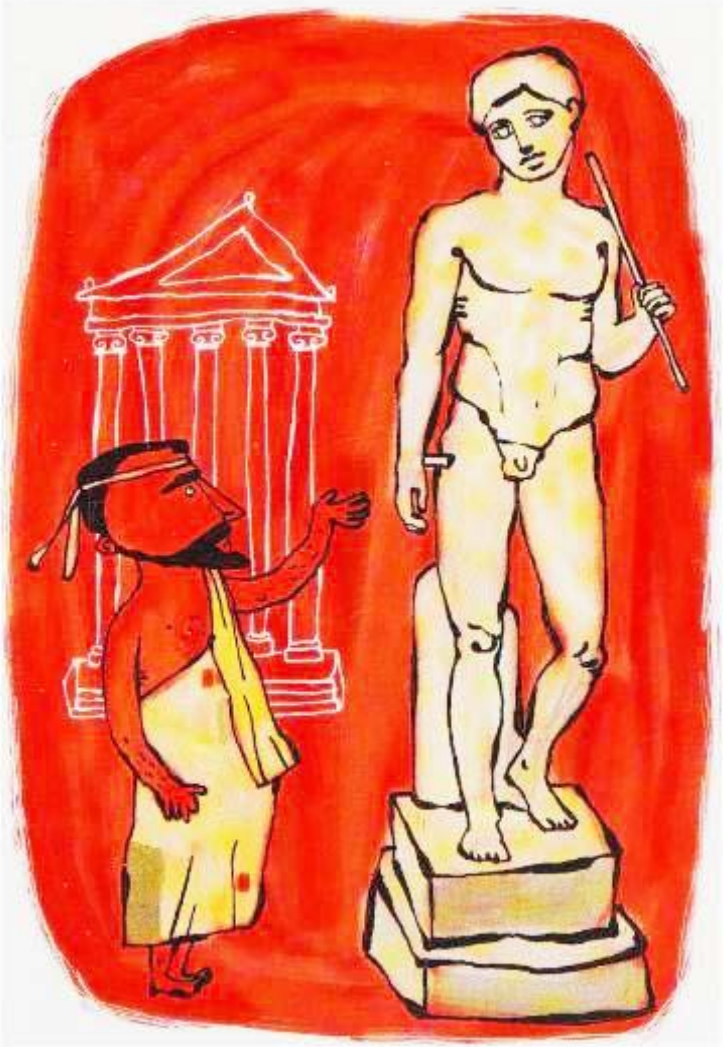

डायोजनीज हमेशा इधर-उधर घूमते रहते थे. अक्सर बच्चे उनके साथ होते थे. वे रास्ते में कीड़ों को बड़े ध्यान से देखते थे. डायोजनीज अपनी तुलना एक कुत्ते से करते थे.

"आप किस तरह के कुत्ते हैं, डायोजनीज?" बच्चे उनसे पूछते थे.

"मैं एक कुत्ते का कुत्ता हूँ! कुत्ते तो सिर्फ अपने दुश्मनों पर ही भौंकते हैं, लेकिन मैं अपने दोस्तों पर भी भौंकता हूं."

तभी एक क्रोधी गंजा आदमी अपने कंधों को सिकोड़ता हुआ उनके पास से गुज़रा.

डायोजनीज ने उसका मजाक उड़ाया. "मैं आपके बालों को बधाई देता हूं. उन्होंने आपके हास्यास्पद सिर को छोड़कर अच्छा ही किया."

डायोजनीज अपने आस-पास के सभी लोगों को हंसाते थे. हंसो और सोचो - यही उनका दर्शन था.

प्राचीन यूनान में, सभी नागरिकों के लिए एक-साथ थिएटर में जाना एक आम बात थी.

जब नाटक खत्म होता और लोग थिएटर से बाहर निकल रहे होते, उस समय डायोजनीज थिएटर में प्रवेश करते थे. पीछे की ओर चलते हुए वो जबरदस्ती धक्का देकर, भीड़ में अपने लिए एक रास्ता बनाते थे!

"तुम पागल हो, डायोजनीज! यह करना बंद करो! तुम आखिर क्या कर रहे हो!?" लोग उनपर चिल्लाते.

यहाँ पर जो लोग आते हैं वे नम्र भेड़ों की तरह आते है, वे एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलते हैं. वे खुद कुछ नहीं सोचते हैं! उसके विपरीत स्वाभिमानी लोग वो करते हैं जो वे चाहते हैं, वो दूसरों की नक़ल नहीं करते हैं!"

शहर में, अन्य दार्शनिक लगातार एकत्रित भीड़ को भाषण देते थे :

"मैं तुमसे कहता हूं मित्रों कि लोग ऐसे होते हैं. ..."

"मैं तुमसे कहता हूं, यारों कि लोग वैसे होते हैं .."

डायोजनीज को उनके भाषणों में सिर्फ गर्म हवा नज़र आती थी. डायोजनीज मानते थे कि हरेक आदमी सक्षम होता है - अगर वो चीज़ों के बारे में सोचे-समझे. डायोजनीज के अनुसार जीवन का उद्देश्य धन-दौलत कमाकर अमीर होना नहीं था. लोगों को अपने जीवन में ज्ञान की तलाश करनी चाहिए थी.

फिर डायोजनीज ने अन्य दार्शनिकों को एक सबक सिखाने का फैसला किया.

दिन के तेज़ उजाले में, शहर की सबसे व्यस्त गली में, वो अपने हाथ में लालटेन लेकर भीड़ में से गुज़रे.

डायोजनीज को देखकर बाकी दार्शनिक चकित रह गए.

"तुम क्या कर रहे हो, डायोजनीज?"

"मैं मनुष्य की तलाश में हूँ!"

"तुम हमेशा की तरह पागल हो, डायोजनीज. हर जगह आदमी ही आदमी हैं!"

"आह, आपने खुद कहा था कि लोग हैं लेकिन कोई मनुष्य नहीं है. आपको सूरज के अलावा एक लालटेन की भी जरूरत पड़ी, वो देखने के लिए जो हर छोटा बच्चा पहले से ही जानता है."

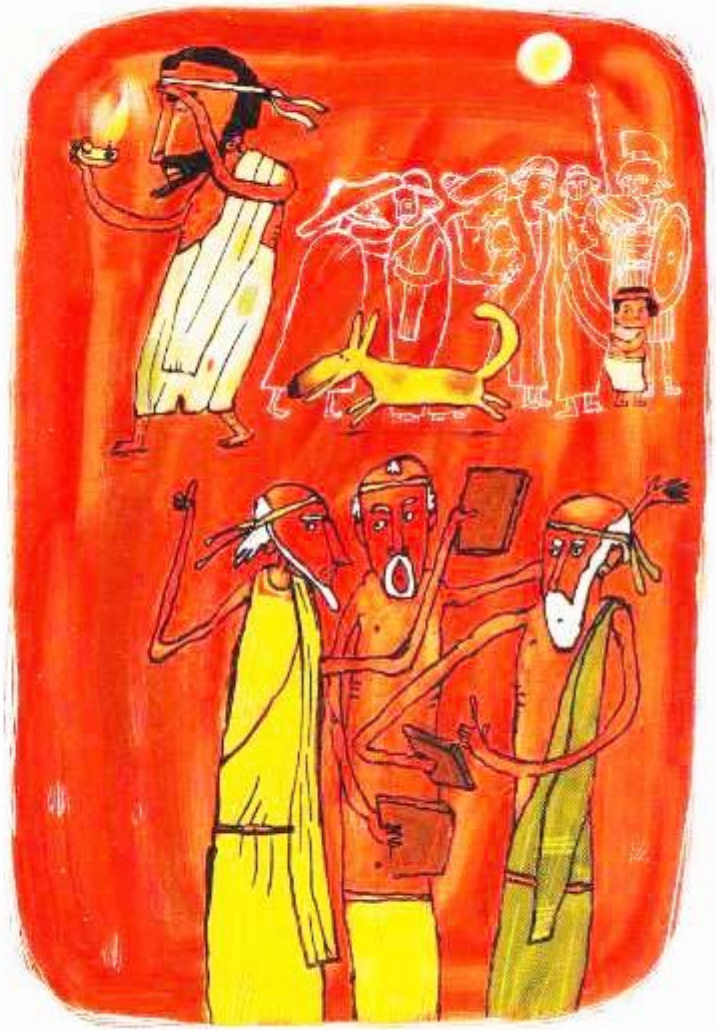

मैसेडोनिया के राजा सिकंदर महान, अपने समय के सबसे बड़ा सेनापति थे, जिन्होंने अपने सारे युद्ध जीते और अथाह ज़मीन पर विजय प्राप्त की.

उन्होंने अपने प्रिय काले घोड़े, बुक्फालस पर सवार होकर एक के बाद एक युद्ध जीते थे.

लेकिन सिकंदर एक सोचने वाले इंसान भी थे. वो हमेशा विवेक तलाशते थे. उसने डायोजनीज की प्रशंसा की, क्योंकि उसे ज़िंदा रहने के लिए किसी भी चीज़ की ज़रुरत नहीं थी.

जब वह कुरिन्थ शहर के पास पहुंचे, तो सिकंदर ने डायोजनीज से मिलने का फैसला किया. उस समय डायोजनीज धूप में सपने देख रहे थे.

स्वर्ण कवच में सजा हुए सिकंदर, डायोजनीज के पास पहुंचा. सिकंदर की बहुत लम्बी परछाई थी. जब वो रुका तो उसकी परछाई डायोजनीज पर पड़ी.

पर साधु डायोजनीज अपनी जगह से नहीं हिला. आपको लगता होगा कि शायद उसने सिकंदर को देखा ही न हो.

सिकंदर ने उनसे बात की.

"तुम जो चाहो मांगो, डायोजनीज. मैं तुम्हारी हर मुराद पूरी करूंगा."

डायोजनीज ने सिकंदर की ओर देखा. फिर उन्होंने बड़ी सरलता से कहा:

"महाराज, कृपया मेरे सूरज की धूप के सामने से हटें."

डायोजनीज न तो महिमा चाहते थे और न पैसा.

डायोजनीज एकदम फक्कड़ और स्वतंत्र थे.

डायोजनीज की लालटेन

यूनानी दार्शनिक डायोजनीज निश्चित रूप से आपको हंसाएगा - और वो आपको सोचने को भी मज़बूर करेगा. वो अपने पुराने लबादे और मिट्टी के ड्रम के साथ हर जगह क्यों घूमता है? बच्चों को छोड़कर वो और सभी लोगों पर हँसता है. दिन की धूप में लालटेन का प्रयोग करके वो बाकी दार्शनिकों को गलत सिद्ध करता है. डायोजनीज, शक्तिशाली राजा सिकंदर महान को भी एक महत्वपूर्ण सीख देता है.